महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण

- 1919 में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वी. एस. सुकथांकर के नेतृत्व में एक अत्यंत महत्त्वाकांक्षी परियोजना की शुरुआत हुई।
- आरंभ में देश के विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियों को एकत्रित किया गया।
- उन्होंने उन श्लोकों का चयन किया जो लगभग सभी पांडुलिपियों में पाए गए थे और उनका प्रकाशन 13,000 पृष्ठों में फैले अनेक ग्रंथ खंडों में किया।
- परियोजना में 47 वर्ष लगे।
- इन सभी प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ मुख्यतः उन ग्रंथों पर आधारित है जो संस्कृत में ब्राह्मणों द्वारा उन्हीं के लिए लिखे गए।
- कालांतर में विद्वानों ने पालि, प्राकृत और तमिल ग्रंथों के माध्यम से अन्य परंपराओं का अध्ययन किया।

बंधुता एवं विवाह (अनेक नियम और व्यवहार की विभिन्नता)

परिवारों के बारे में जानकारी

- एक ही परिवार के लोग भोजन मिल बाँट के करते हैं ।
- परिवार के लोग संसाधनों का प्रयोग मिल बाँट कर करते हैं ।
- परिवार के लोग एक साथ रहते थे ।
- परिवार के लोग एक साथ मिलकर पूजा पाठ करते हैं ।
- कुछ समाजों में चचेरे और मौसेरे भाई बहनों को भी खून का रिश्ता माना जाता ।

पितृवंशिक व्यवस्था के आदर्श

- महाभारत की कहानी बांधवों के दो दलों – कौरव और पांडव – के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए संघर्ष का चित्रण करती है।
- दोनों ही दल कुरु वंश से संबंधित थे जिनका एक जनपद पर शासन था।
- यह संघर्ष एक युद्ध में परिणत हुआ जिसमें पांडव विजयी हुए।
- इनके उपरांत पितृवंशिक उत्तराधिकार को उद्घोषित किया गया।
- हालाँकि पितृवंशिकता महाकाव्य की रचना से पहले भी मौजूद थी, महाभारत की मुख्य कथावस्तु ने इस आदर्श को और सुदृढ़ किया।
- पितृवंशिकता में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उनके संसाधनों पर (राजाओं के संदर्भ में सिंहासन भी) अधिकार जमा सकते थे।
- अधिकतर राजवंश (लगभग छठी शताब्दी ई.पू. से) पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे।हालाँकि इस प्रथा में विभिन्नता थी।
- कभी पुत्र के न होने पर एक भाई दूसरे का उत्तराधिकारी हो जाता था तो कभी बंधु-बांधव सिंहासन पर अपना अधिकार जमाते थे। कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियाँ जैसे प्रभावती गुप्त सत्ता का उपभोग करती थीं।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

विवाह के नियम

ब्राह्मणों ने समाज के लिए एक विस्तृत आचारसंहिता तैयार की है ।

लगभग 500 ई० पु० से इन मानदण्डों का संकलन धर्मसूत्र व धर्मशास्त्र नामक संस्कृत ग्रंथो में किया गया । इनमे सबसे महत्वपूर्ण मनुस्मृति थी । जिसका संकलन 200 ई० पु० से 200 ई० के बीच किया गया ।

दिलचस्प बात यह है कि धर्मसूत्र व धर्मशास्त्र विवाह के 8 प्रकारों को अपनी स्वीकृति देती है । इनमे से पहले चार उत्तम मने जाते हैं और बाकियो को निंदित माना गया है । सम्भवतः यह विवाह पद्धतियाँ उन लोगो मे प्रचलित थी जो ब्राह्मणीय नियमो को अस्वीकार करते थे ।

स्त्री का गोत्र

एक ब्राह्मणीय पद्धति जो लगभग 1000 ई.पू. के बाद से प्रचलन में आई, वह लोगों (खासतौर से ब्राह्मणों) को गोत्रों में वर्गीकृत करने की थी।

गोत्र-एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था। उस गोत्र के सदस्य ऋषि के वंशज माने जाते थे।

<u>गोत्रों के दो नियम</u>:-

1. विवाह के पश्चात स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था
2. एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे।

क्या माताएँ महत्वपूर्ण थीं?

सातवाहन राजाओं को उनके माता के नाम से से चिह्नित किया जाता था। (इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं)

परन्तु सातवाहन राजाओं के संदर्भ में हमें यह ज्ञात है कि सिंहासन का उत्तराधिकार पितवंशिक होता था।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

सामाजिक विषमताएँ

ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है।
शूद्रों और 'अस्पृश्यों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था।
yeh व्यवस्था-जन्म के अनुसार

'उचित' जीविका

धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में चारों वर्गों के लिए आदर्श 'जीविका' के नियम:

- ब्राह्मणों का कार्य : अध्ययन, वेदों की शिक्षा, यज्ञ करना और करवाना था तथा उनका काम दान देना और लेना था।
- क्षत्रियों का कार्य : युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करवाना और दान-दक्षिणा देना था।
- वैश्यों का कार्य : कृषि, गौ-पालन और व्यापार
- शूद्रों – तीनों 'उच्च' वर्णों की सेवा करना ।

इन नियमों का पालन करवाने के लिए ब्राह्मणों ने दो-तीन नीतियाँ अपनाईं:

1. वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति-दैवीय व्यवस्था
2. शासकों को यह उपदेश देते थे कि वे इस व्यवस्था के नियमों का अपने राज्यों में अनुसरण करें।
3. तीसरे, उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि उनकी प्रतिष्ठा जन्म पर आधारित है।

अक्षत्रिय राजा

इतिहास में कई ऐसे राजा रहे हैं जो क्षत्रिय नहीं थे ।
मौर्य वंश का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य जिसने एक विशाल साम्राज्य पर राज किया था बौद्ध ग्रंथों में यह बताया गया है कि वह क्षत्रिय है लेकिन ब्राह्मण शास्त्र में यह कहा गया है कि वह निम्न कुल के हैं ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

जाति और सामाजिक गतिशीलता

- ब्राह्मणीय सिद्धांत-जाति भी जन्म पर आधारित,
- जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी।
- जहाँ कहीं भी ब्राह्मणीय व्यवस्था का नए समुदायों से आमना-सामना हुआ उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया
- वे जातियाँ जो एक ही जीविका अथवा व्यवसाय से जुड़ी `थीं उन्हें कभी-कभी श्रेणियों में भी संगठित किया जाता था।
  श्रेणी की सदस्यता शिल्प में विशेषज्ञता पर निर्भर थी।

- उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विविधताओं की वजह से यहाँ हमेशा से ऐसे समुदाय रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
  चाण्डाल - शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वाले (वर्ण व्यवस्था : निम्न कोटि)
  मनुस्मृति में चाण्डालों के 'कर्तव्यों' :
- उन्हें गाँव के बाहर रहना होता था।
- फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे
- मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे।
- रात्रि में वे गाँव और नगरों में चल-फिर नहीं सकते थे।

सम्पत्ति पर स्त्री , पुरुष के भिन्न अधिकार :-

मनु स्मृति के अनुसार :-

- पिता की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति पुत्रों में बाँटी जाती थी।
- ज्येष्ट पुत्र को विशेष हिस्सा दिया जाता था ।
- विवाह के दौरान मिले उपहार पर स्त्री का अधिकार था ।
- यह संपति उसकी संतान को विरासत में मिलती थी ।
- पति का उस पर अधिकार नहीं था ।
- स्त्री पति की आज्ञा के बिना गुप्त धन संचय नही कर सकती थी ।
- उच्च वर्ग की औरत संसाधनों पर अधिकार रखती थी ।

पुरुषो के लिए मनुस्मृति कहती है धन अर्जित करने के 7 तरीके थे :-

(i) विरासत
(ii) खरीद
(iii) विजित करके
(iv) निवेश
(V) खोज
(Vi) कार्य द्वारा
(Vii) सज्जनों द्वारा भेट को स्वीकार करके

स्त्रियों के लिए सम्पति अर्जन के 6 तरीके

(i) वैवाहिक अग्नि के सामने
(ii) वधुगमन के समय मिली भेंट
(iii) स्नेह के प्रतीक के रूप में
(iv) माता द्वारा दिये गए उपहार
(V) भ्राता द्वारा दिये गए उपहार
(Vi) पिता द्वारा दिये गए उपहार

वर्ण एवं संपति के अधिकार :-

- शुद्र के लिए केवल एक जीविका थी →सेवा करना
- लेकिन उच्च वर्गों में पुरुषो के लिए अधिक संभावना थी ।
- ब्राह्मण और क्षत्रिय धनी व्यक्ति थे ।
- बौध्दों ने ब्राह्मणीय वर्ण व्यवस्था की आलोचना की ।
- बौध्दों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को स्वीकार नहीं किया ।

बौद्ध धर्म के अनुसार सामाजिक विषमता का कारण

- बौद्ध धर्म के मुख्य ग्रंथ सुत्तपिटक के अनुसार
- शुरुआत में मानव पूरी तरह विकसित नहीं था

LET'S LEARN TOGETHER

- इसी वजह से वह प्रकृति से सिर्फ उतना ही ग्रहण करता था जितनी उसे एक समय में आवश्यकता होती थी
- पर समय के साथ-साथ यह व्यवस्था बदली और मनुष्य लालची और कपटी हो गया और सभी संसाधनों पर नियंत्रण करने की कोशिश करने लगा
- इस स्थिति को देखते हुए उस समय के लोगों ने विचार किया कि क्या हम किसी ऐसे व्यक्ति को चुन सकते हैं
- जो कि सही बातों पर क्रोधित हो और ऐसे व्यक्तियों को सजा दे सके जो कि समाज में बुराइयां फैला रहा है
- उसके इस कार्य के बदले हम उसे चावल का अंश देंगे
- यहां पर राजा के चुनाव की बात की गई है जो कि देखेगा कि समाज में स्थिति सही तरीके से चलती रहे
- चावल के अंश का मतलब राजा को दिए वाले दिए जाने वाले कर हैं

साहित्यक , स्रोतों का इस्तेमाल :-

किसी भी ग्रन्थ का विश्लेषण करते समय इतिहासकार कई पहलुओ का ध्यान रखते हैं:-

- भाषा = साधारण भाषा या विशेष भाषा
- ग्रंथ का प्रकार = मंत्र या कथा
- लेखक के विषय में (दृष्टिकोण)
- श्रोताओं का निरीक्षण
- ग्रंथ का रचना काल ,विषयवस्तु

सदृशता की खोज

सदृशता की खोज में बी. बी. लाल के प्रयास :-

- 1951 - 52 में एक प्रसिद्ध पुरातात्विक और इतिहासकार (जिनका नाम बी. बी. लाल था) ने मेरठ जिले (उत्तरप्रदेश)

हस्तिनापुर नाम के गांव में खुदाई का काम किया ।
लेकिन जैसा हम किताबों में पढ़ते आएं हैं यह हस्तिनापुर वैसा बिल्कुल नहीं था ।

- संयोग से इस जगह का नाम भी हस्तिनापुर ही था। बी. बी. लाल जी को यहाँ की आबादी के कुछ सबूत मिले । बी. बी. लाल ने बताया कि जिस जगह खुदाई की गई वहां से मिट्टी की बनी दीवारों और कच्ची ईंटों के अलावा कुछ भी नहीं मिला ।

और इससे यह बात पता चली की शायद जैसा महाभारत में हस्तिनापुर दिखाया जाता रहा है जिसमे बड़े बड़े महल भी थे लेकिन यहां से ऐसा कुछ नहीं मिला है।

महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है,

क्योंकि शताब्दियों तक इस महाकाव्य में अनेक पाठान्तर भिन्न-भिन्न भाषाओं में लिखें गए, क्षेत्र विशेष की कहानियाँ इसमें समाहित कर ली गयी। इसकी अनेक पुनव्याख्याएँ की गई। इस महाकाव्य ने मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला व नाटकों के लिए विषय वस्तु प्रदान की।

LET'S LEARN TOGETHER